देवशिला यात्रा : आस्था और भक्ति में डूबा जनकपुरधाम

निरंजन कुमार साह ● जनकपुर (नेपाल)

जनकपुरधाम रविवार को आस्था और भक्ति में डूबा रहा। सुबह से देर शाम तक मंदिर परिसर में देवशिला के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। जानकी मंदिर के महंत राम तपेश्वर दास वैष्णव के निर्देशन में दोनों देवशिलाओं की परंपरागत तरीके से पूजा-अर्चना की गई। सर्वप्रथम देवशिलाओं को स्नान व शृंगार कराया गया। इसके बाद वस्त्र अर्पित किए गए। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हवन भी किया गया। श्रद्धालुओं ने देवशिला पर पुष्पवर्षा की। जनकपुर धाम मंदिर में देवशिला के दर्शन को भीड़ रही। हवन-पूजन के दौरान मधेश प्रांत के मुख्यमंत्री सरोज यादव, क्षेत्र संख्या तीन की सांसद जूली महतो, प्रतिनिधि सभा के सदस्य विमलेंद्र निधि, हरिशंकर मिश्रा, रामचंद्र मंडल, अनिल झा, विश्व हिंदू परिषद के अशोक कुमार साह के अलावा महंत राम रौशन दास वैष्णव आदि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री सरोज यादव ने कहा भारत और नेपाल के मध्य धार्मिक स्थिरता ही है जो किसी भी राजनीतिक अस्थिरता को निष्प्रभावी कर देती है। दोनों देशों के बीच बने चेकपोस्ट को छोड़ दिया जाए तो रोटी-बेटी के संबंध वाले भारत-नेपाल के बीच कहीं भी सीमा का पता नहीं चलता। इस प्रेम की कोई सीमा नहीं है और प्रेम की प्रगाढ़ता का कारण धार्मिक संबंध ही है।

जनकपुरधाम में देवशिला की पूजा करते नेपाल के मधेश प्रांत के मुख्यमंत्री सरोज यादव (पहली पंक्ति में बाएं से पहले) ● जागरण

आज मधुबनी पहुंचेगी देवशिला यात्रा: देवशिला यात्रा सोमवार को भारत-नेपाल की जटही सीमा से मधुबनी में प्रवेश करेगी। यहां यात्रा में शामिल संतों को मिथिला की परंपरा के अनुसार पाग-दोपटा से स्वागत किया जाएगा। करीब 10 बजे यह यात्रा हरलाखी प्रखंड के फुलहर पहुंचेगी।

जिस पग पहुंचे सीताराम, उस पग पर देवशिला के राम: नेपाल की काली गंडकी से निकली देवशिला यात्रा अयोध्या जाने के क्रम में सोमवार को भारत-नेपाल की जटही सीमा से मधुबनी में प्रवेश करेगी। यात्रा उन स्थलों से भी गुजरेगी, जहां कभी प्रभु श्रीराम और माता जानकी के कदम पड़े थे। ये प्रभु श्रीराम के अयोध्या से जनकपुर धाम जाने, मिथिला भ्रमण और माता जानकी से विवाह के बाद लौटने के प्रसंग से जुड़े हैं।

कण-कण राम, मन-मन गारी पुरुषों देत नहिं खाली नारी

नेपाल के जनकपुरधाम से बृजेश दुबे : विश्व ब्रह्म के रूप में पूजा करता है, हम संबंधी के रूप में अपने हृदय तल में विराजमान किए हुए हैं। यहां के जमाता हैं, जंवाई हैं, किशोरीजी के प्राण हैं। किशोरीजी हमारी दीदी हैं तो राम के हम सार (साला) हुए। गारी देने का हक भी बनता है। हम तो हमारे राम को गारी देते हैं। हर रोज नई गारी देते हैं। कभी करियहवा, करिकवा, करलुठवा, चोरवा, चितचोरवा, कभी कजरुआ कभी कुछ...। राम को बिना गारी दिए चैन नहीं पड़ता है। हम ही नहीं, बहुत से पुरुष हैं जो रामजी को गारी देते हैं। नौ पुश्त तक गाली देने की परंपरा है। जानकी मंदिर में सेवा देने वाले जयशंकर नाथ झा यह बताते हुए अत्यंत मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। राम नाम पर उनका यह भाव बता रहा कि मिथिला की राजधानी जनकपुर में राम क्या हैं।

सभी तैयारी करने की अपील की है।

[redacted] मंदिर के पुजारी के बयान पर डा. शुक्ल की प्रतिक्रिया

जनखत से ईसा पूर्व का शिलालेख व शालभंजिका मूर्ति ही लायी गयी

सहारा समाचार

कन्नौज, 14 नवम्बर। कन्नौज के पुरातात्विक महत्व की सम्पदाओं को स्थानीय संग्राहलय में संग्रह किया गया है वर्तमान समय में संग्राहलय प्रशासन की उपेक्षा का शिकार हो रहा है। कन्नौज संग्राहलय 77-78 में अपने पूरे चरम उत्कर्ष पर था। तत्कालीन जिलाधिकारी फर्रुखाबाद आर.एन. त्रिवेदी जो संग्राहलय समिति के पदेन अध्यक्ष भी थे। कन्नौज की प्राचीन धरोहर को सुरक्षित व अक्षुण बनाये रखने में प्रशासन स्तर से भी महत्वपूर्ण योगदान किया। जनखत क्षेत्र से अब तक ईसा पूर्व का शिलालेख व शालभंजिका की मूर्ति ही लायी गयी है।

यह बात आज यहां वरिष्ठ साहित्यकार व लोकसभा कांग्रेस के प्रभारी डा. जीवन शुक्ल ने [redacted] मन्दिर के पुजारी मनोहरलाल के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कही। डा. शुक्ला ने प्रेस को बताया क कन्नौज संग्राहलय के पैनल में लगी मूर्तियां व शिलालेख कन्नौज के आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त मूर्तियां हैं। संग्राहलय में रखी कोई भी मूर्ति या शिलालेख किसी स्थान से खोदकर नहीं निकाली गयी। जनखत से मूर्ति निकाले जाने पर जनखत के पतन की बात पूर्णतया अनुचित है क्योकि किसी भी स्थान का पतन या उन्नति उस स्थान के नागरिकों के कर्म पर निर्भर है मन्दिर के पुजारी भ्रामक स्थिति उत्पन्न कर जनता को भड़का रहे हैं।

पुजारी के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए तत्कालीन संयुक्त सचिव उमेश अवस्थी ने बताया कि जनखत क्षेत्र से मात्र दो मूर्तियां जिसमें एक ईसा पूर्व की नागवंशी राजाओं का शिलालेख व गुप्ताकालीन शालभंजिका की ही प्राप्त हुई थी। उक्त दोनों ही मूर्तियां खुदाई से नहीं वरन किसी वृक्ष के नीचे रखी मिली थी। जिसका प्रयोग ग्रामीणों ने अज्ञानतावश अपने खेती के औजारों पर धार रखने के लिए किया था इस नासमझी के कार्य कारण शिलालेख की लिपि काफी हद तक घिस गयी। दोनों पुरातात्विक मूर्तियों की महत्व के बारेमें ज्ञात होने पर तत्कालीन जिलाधकारी आर.एन. त्रिवेदी ने उस समय के एस.एस.पी. रणबहादुर सिंह के सहयोग से पुरामहत्व की मूर्तियों को यहां के संग्राहलय में सुरक्षित करा दिया था।

मालूम हो कि श्री त्रिवेदी के जाने के बाद से फर्रुखाबाद में कई डी.एम. आये और गये किन्तु कन्नौज संग्राहलय अपने दिन बहुरने की प्रतीक्षा करता रहा।

इस सम्बन्ध में पूंछे जाने पर जिलाधिकारी दिनेश चन्द्र मिश्रा ने बताया कि कन्नौज की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित व पर्यटकों के अवलोकन के लिए सुगम बनाने के लिए पर्यटक आवास गृह के खाली पड़े मैदान में नया भवन कर संग्राहलय स्थापित किया जायेगा। श्री मिश्र ने बताया कि इस सम्बन्ध में सांस्कृतिक निर्देशिका उमा वर्मा के निर्देशानुसार पुराने अभिलेख मंगाये गये हैं जिनके प्राप्त होते ही संग्राहलय भवन का निर्माण होगा संग्राहलय के लिए कम से कम 75 हजार रुपये की निधि भी आ चुकी है। संग्राहलय व कन्नौज की सांस्कृतिक विरासत का ऊंट किस करवट बैठेगा समय ही बतायेगा।